रजिस्ट्री सं० डी-(डी)—73

REGISTERED NO. D-(D)—73

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 18] नई दिल्ली, शनिवार, मई 1, 1976 (वैशाख 11, 1898)
No. 18] NEW DELHI, SATURDAY, MAY 1, 1976 (VAISAKHA 11, 1898)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

नोटिस
NOTICE

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 31 मार्च 1976 तक प्रकाशित किए गए हैं :—

The undermentioned *Gazettes of India Extraordinary* were published up to the 31st March 1976:—

अंक Issue No.	संख्या और तिथि No. and Date	द्वारा जारी किया गया Issued by	विषय Subject
1	2	3	4
68.	सं० 27—आई० टी० सी० (पी० एन०)/76, दिनांक 22 मार्च 1976।	वाणिज्य मंत्रालय	यू० के०/भारत क्षेत्रीय अनुदान, 1975 (संख्या 2) दिनांक 2-12-1975 के लिए लाइसेंस शर्तें।
	No. 27-ITC (PN)/76, dated the 22nd March, 1976	Ministry of Commerce	Licensing conditions for the U. K./India Sectional Grant, 1975 (No. 2) dated 2-12-1975.
69.	सं० 28—आई० टी० सी० (पी० एन०)/76, दिनांक 29 मार्च 1976।	वाणिज्य मंत्रालय	यू० के०/भारत क्षेत्रीय अनुदान, 1975 दिनांक 27-6-1975 के लिए लाइसेंस शर्तें—लाइसेंस कोड का संशोधन।
	No. 28-ITC (PN)/76, dated the 29th March, 1976	Ministry of Commerce	Licensing conditions for the U. K./India Sectoral Grant, 1975 dated 27th June, 1975—amendment of the licence Code.
70.	सं० 3/4/76-पब्लिक, दिनांक 31 मार्च 1976।	गृह मंत्रालय	हरियाणा के राज्य पाल श्री वीरेन्द्र नारायण चक्रवर्ती का देहवसान।
	No. 3/4/76-Public, dated the 31st March, 1976	Ministry of Home Affairs.	Death of Shri Birendra Narayana Chakravarty, Governor of Haryana.

उपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियां, प्रकाशन नियंत्रक, सिविल लाईन्स, दिल्ली के नाम मांग-पत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी। मांग-पत्र नियंत्रक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तिथि से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिए।

Copies of the *Gazettes Extraordinary* mentioned above will be supplied on indent to the Controller of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Controller within ten days of the date of issue of these Gazettes.

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं . .	373
भाग I—खंड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं .	713
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं .	—
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं .	581
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम . . .	—
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों संबंधी प्रवर समितियों की रिपोर्टें . .	—
भाग II—खंड 3—उपखंड (i)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारियों द्वारा जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं) . .	1083
भाग II—खंड 3—उपखंड (ii)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारियों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश और अधिसूचनाएं . .	1521
भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश .	137
भाग III—खंड 1—महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के अधीन तथा संलग्न कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	3569
भाग III—खंड 2—एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिस	337
भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं	27
भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विधिक अधिसूचनाएं जिनमें अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं . . .	1411
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिस	69

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	373
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	713
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministry of Defence	—
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Officers issued by the Ministry of Defence.	581
PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations	—
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills	—
PART II—SECTION 3.—SUB. SEC. (i).—General Statutory Rules (including orders, bye-laws etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	1083
PART II—SECTION 3.—SUB. SEC. (ii).—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	1521
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence ..	137
PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India ..	3569
PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Offices, Calcutta ..	337
PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners.	27
PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	1411
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies	69

भाग I—खण्ड 1

PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 1 जुलाई 1975

सं० 34-प्रेज/76—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को वीरता के लिए "शौर्य चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. 28 61347 राइफलमैन पिरथी सिंह,
राज राइफल्स ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 17 जनवरी, 1975)

17 जनवरी, 1975 को 2 राज राइफल्स के राइफलमैन पिरथी सिंह एक दल के अगुवा थे जिसे विरोधियों के एक गिरोह का पीछा करने वाली एक राइफल कम्पनी के पास एक खोजी कुत्ता पहुंचाने का काम सौंपा गया था। इस दल को पांच मील लम्बे उस बांस वाले बीहड़ जंगल में से गुजरना था, जहां विरोधियों के छुपाव-स्थान होने का सन्देह था। जब यह दल मुश्किल से आधा रास्ता ही तय कर पाया था कि उस पर स्वचालित हथियारों से लैस विरोधियों के एक दल ने गोली चला दी। इस मुठभेड़ के दौरान राइफलमैन पिरथी सिंह के चेहरे पर चोट आई लेकिन इसके बावजूद इन्होंने तत्काल विरोधियों पर धावा बोल दिया। दूसरी बार फिर इनके हाथ पर चोट आई लेकिन उसकी परवाह किए बिना इन्होंने अकेले ही हमला जारी रखा। इस दौरान इन्होंने दो विरोधियों को घटनास्थल पर ही मार गिराया और बाकियों को अपनी जान बचा कर भाग निकलने के लिए मजबूर होना पड़ा। इस प्रकार इन्होंने अपने दल की रक्षा की, अन्यथा वे विरोधियों की गोलीबारी की चपेट में आ जाते। राइफलमैन पिरथी सिंह ने अपने कर्त्तव्य को प्राथमिकता दी और वापिस लौटने की बजाय कुत्ते को पहुंचाने के लिए दल के साथ हो लिए।

इस कार्रवाई में राइफलमैन पिरथी सिंह ने उदाहरणीय साहस, दृढ़ता और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

2. स्क्वाड्रन लीडर राजिन्दर पाल सिंह ढिल्लों (7741)
उड़ान (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 24 जनवरी, 1975)

स्क्वाड्रन लीडर राजिन्दर पाल सिंह ढिल्लों को नवम्बर, 1962 में, भारतीय वायुसेना की उड़ान (पायलट) शाखा में कमीशन प्रदान किया गया था। वे मार्च, 1974 से एक हैलीकोप्टर यूनिट के फ्लाइट कमाण्डर के रूप में कार्य कर रहे हैं।

24 जनवरी, 1975 को, इन्हें हिमाचल प्रदेश में भूचाल से पीड़ित लोगों को राहत पहुंचाने को कहा गया। एक तो मौसम बहुत ही खराब था, ऊपर से खतरनाक पहाड़ी इलाका; ऐसे में उड़ान करना जान जोखिम का काम था। लेकिन इन्होंने गहन निष्ठा, अविचलित लगन, दृढ़संकल्प और उच्च कोटि की व्यावसायिक दक्षता से अपना काम पूरा किया। दिन भर, खराब मौसम और उड़ान की दृष्टि से खतरनाक इलाके की दिक्कतों से जूझते हुए, इन्होंने राहत का अत्यन्त आवश्यक सामान वहां पहुंचाया और उन लोगों को निकाल कर लाए जिन्हें फौरन डाक्टरी सहायता की जरूरत थी, बाद की उड़ानों के दौरान, इन्होंने उन हैलीपैडों पर भी निडरता से अपना हैलीकोप्टर उतारा, जिनका इस्तेमाल पहले कभी नहीं हुआ था और सामान गिराने की छोटी-छोटी जगहों पर भी, ऐन ठिकानों पर सामान गिराया। इन संक्रियाओं के दौरान इन्होंने कुल 32 उड़ानें की तथा काफी अधिक मात्रा में सामान ढोकर ले गए और वहां गिराया, जिससे संकटग्रस्त लोगों को समय पर राहत पहुंचाई जा सकी।

स्क्वाड्रन लीडर राजिन्दर पाल सिंह ढिल्लों ने आद्योपान्त उच्चकोटि के साहस, व्यावसायिक दक्षता और कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

सं० 35 प्रेज/76—राष्ट्रपति निम्नांकित कार्मिकों को असाधारण कर्त्तव्यनिष्ठा एवं साहस के कार्यों के लिए "सेना मैडल"/"आर्मी मैडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. कैप्टन हरविन्दर सिंह हंसपाल (एस० एस० 24393),
कुमाऊं रैजिमेंट।

8 अक्तूबर, 1974 को एक कम्पनी के कमांडिंग अफसर, कैप्टन हरविन्दर सिंह हंसपाल को एक गश्ती दल के साथ मोग्तीकान जाने का आदेश दिया गया। इन्हें दीखू नदी के पूर्वी भाग पर पूरी तरह नजर रखने और विरोधियों के एक गिरोह को रोकने का काम सौंपा गया था। जो फोम के रास्ते होते हुए नदी पार करने वाला था।

12 अक्तूबर, 1974 को जब कैप्टन हंसपाल काम समाप्त करने के बाद अपने दल के साथ लोगियंग वापिस आ रहे थे तो इन्होंने गोली चलने की आवाज सुनी।

इन्होंने तुरन्त ही अपने साथियों को अपना सब सामान वहीं कुछ व्यक्तियों की देख-रेख में छोड़ने को कहा और उन्हें साथ लेकर उस ओर चल दिए जहां से गोली की आवाज आई थी। रास्ते में एक ग्राम गार्ड कमांडर ने इन्हें बताया कि लगभग 80 विरोधियों के गिरोह से उसकी मुठभेड़ हुई है। कैप्टन हंसपाल ने तत्काल स्थिति भांप ली और अपने सैनिकों को उचित जगहों पर तैनात करने के बाद उस इलाके को छानना शुरू किया। इन्होंने वहां से बहुमूल्य कागजात, उपस्कर, वस्त्र तथा राशन आदि बरामद किया। खून के कुछ निशानों का पीछा करते हुए अगले तीन दिन तक इन्होंने अपने दल के साथ बड़ी बड़ी घास और बीहड़ जंगल में से भागते हुए विरोधियों का निरन्तर पीछा किया।

पुनः 21 अक्तूबर 1974 को जब कैप्टन हंसपाल अपने 15 अन्य साथियों के साथ एक और इलाके में गश्त लगा रहे थे तो इन्हें एक विरोधी गिरोह के बारे में मालूम हुआ। इन्होंने नायक केशव दत्त के साथ एक सीधी स्पाट चट्टान को सफलतापूर्वक पार किया और विरोधियों के गिरोह को घने जंगल में आराम करते हुए देख लिया। चूंकि इस गिरोह की नजर भी इन पर पड़ गई थी, कैप्टन हंसपाल को अपने पैट्रोल की प्रतीक्षा करने का समय नहीं था। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की जरा भी परवाह न करते हुए वे गिरोह पर टूट पड़े जिसमें नायक केशव दत्त ने उनकी सराहनीय सहायता की। सारा गिरोह पूरी तरह से अस्त-व्यस्त हो गया और सभी छुपने के लिए इधर-उधर भाग खड़े हुए। वे अपने पीछे एक स्वचालित राइफल गोलाबारूद, काफी बड़ी मात्रा में व्यक्तिगत सामान और कीमती कागजात छोड़ गए।

इन कार्रवाइयों में कैप्टन हरविन्दर सिंह हंसपाल ने अदम्य साहस, नेतृत्व, दृढ़ता और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

2. जे० सी० 67655 नायब सूबेदार फकीर चन्द कटोच, सिगनल कोर।

19 जनवरी, 1975 को सुम्दो और उसके आसपास के क्षेत्र में एक भारी भूकम्प आया। निशान झोपड़ियों की दीवारें गिरने लगीं अन्य इमारतों में दरारें पड़ गईं और चारों ओर से बड़े-बड़े शिलाखण्ड घाटी में गिरने लगे जहां पर कैम्प लगा हुआ था। भूकम्प के इन भारी झटकों के तत्काल बाद स्काउट विंग के कमांडिंग अफसर ने चौकियों पर तैनात जवानों की स्थिति जानने की कोशिश की लेकिन टेलीफोन की लाइनें खराब होने के कारण सम्पर्क स्थापित नहीं किया जा सका।

नायब सूबेदार फकीर चन्द कटोच ने संचार व्यवस्था के महत्व को महसूस किया और एक गश्ती दल बनाया ताकि चौकियों से सम्पर्क स्थापित हो सके। भूकम्प के झटके अभी पड़ रहे थे और ऊपर से शिलाखण्ड गिर रहे थे। लेकिन अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए ये अपने काम में लगे रहे और 20 जनवरी, 1975 की सायं तक पूरे उस क्षेत्र में संचार व्यवस्था कायम करने में सफलता प्राप्त कर ली।

इस कार्रवाई में नायब सूबेदार फकीर चन्द कटोच ने अदम्य साहस, व्यावसायिक कुशलता और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

3. 3961012 नायक राम सिंह,
डोगरा रैजिमेंट।

19 जनवरी, 1975 को भयंकर भूकम्प से हिमाचल प्रदेश में 50 की जनसंख्या वाला कौरिक गांव पूरी तरह ध्वस्त हो गया था। इस स्थिति को देखकर कम्पनी कमांडर ने वहां के लोगों की चिकित्सा सबंधी सहायता के लिए एक गश्ती दल वहां भेजने का निर्णय किया। नायक रामसिंह दल का नेतृत्व करने के लिए आगे आए। अदम्य साहस और आत्मविश्वास के साथ ये गश्ती दल को उस जोखिम भरे रास्ते से ले गए जो कि अनेक स्थानों पर बुरी तरह से टूट गया था। गश्ती दल गांव पहुंचा जहां तब भी लगातार भूकम्प के झटके आ रहे थे और ऊपर से शिलाखण्ड गिर रहे थे।

वे तुरन्त सहायता कार्य की व्यवस्था में जुट गए और बचे हुए लोगों के लिए रहने की जगह बनाई और घायलों को वहां पहुंचाया। अगले दिन इन्होंने वहां के लोगों के लिए भोजन व्यवस्था और तम्बुओं का इन्तजाम किया।

इस कार्यवाही में नायक रामसिंह ने साहस, दृढ़ता और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

4. 2850771 लांस नायक पबुदन सिंह,
2 राज राइफल्स।

17 जनवरी, 1975 को लांस नायक पबुदन सिंह उस टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे थे जिसे एक विरोधी गिरोह को घेर लेने का काम सौंपा गया था। इसके लिए इनकी टुकड़ी को जिससे एक पगडंडी सम्भाली गई थी जो एक घने जंगल से होकर गुजरती थी और जिसकी बांयी ओर 30 फुट सीधी ढलान थी। उस इलाके में आगे केवल 5 गज तक ही नजर जा सकती थी। दोपहर बाद इनकी टुकड़ी के एक संतरी ने इन्हें कुछ हलचल होने की सूचना दी। इस पर ये उस संतरी के पास गए और उसे वहीं पर मुस्तैदी से सावधान रहने के लिए कह कर स्वयं अकेले संदिग्ध स्थान की ओर बढ़े। ये अभी मुश्किल से कोई 50 गज ही आगे चले होंगे कि अकस्मात इनका 3 विरोधियों से सामना हो गया जिनमें से दो स्वचालित हथियारों से लैस थे। इनके तथा विरोधियों के बीच की दूरी इतनी कम थी कि कोई भी गोली नहीं चला सकता था। विरोधियों ने बच निकलने के लिए तुरन्त दांयी ओर 30 फुट गहरी खड्ड में छलांग लगा दी घने जंगल के कारण भागते हुए विरोधियों पर गोली का लगना सम्भव

नहीं था। लांस नायक पबुदन सिंह ने भी विरोधियों को पकड़ने के प्रयास में उनके पीछे ही छलांग लगा दी। उनका ध्यान बटाने के लिए विरोधियों ने अपने हथियार फैंक दिए। लांस नायक पबुदन सिंह उनका पीछा करते रहे और अन्त में उन्हें पकड़ लिया। ये उन तीनों को अपनी सक्शन चौकी पर ले आए और बाद में एक 7.62 मि० मी० की आई० ए० एस० एल० आर० राइफल तथा .303 की राइफल बरामद की जिन्हें वे छोड़कर भाग गए थे। पकड़े गए विरोधियों में से एक स्वयं कथित अफसर भी मिला जिसने पूछताछ करने पर गिरोह के अन्य सदस्यों के बारे में काफी महत्वपूर्ण सूचना दी जिसके आधार पर उन्हें पकड़ने में सहायता मिली।

इस कार्रवाई में लांस नायक पबुदन सिंह ने अदम्य साहस, सूझ-बूझ और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

5. 9211936 लांस नायक विजय पोलई,
महार रैजिमेंट।

17 जनवरी, 1975 को लांगचांग गांव के नजदीक विरोधियों के एक गिरोह का पता मिला। उनके साथ हुई भयंकर मुठभेड़ में यह देखा गया कि कुछ विरोधी घने झाड़-झगाड़ से ढके एक छोटे से नाले से होकर भाग निकलना चाहते हैं। तुरन्त ही एक तरफ से जूनियर कमीशंड अफसर के अधीन एक दस्ता उनका रास्ता रोकने के लिए भेजा गया। लांस नायक विजय पोलई इस गश्ती टुकड़ी के अग्रिम स्काउट थे। काफी सरगर्मी से पीछा करने के पश्चात् यह टुकड़ी, विरोधियों को अपने कब्जे में लेने में सफल हुई। जब यह टुकड़ी विरोधियों को घेरने में लगी हुई थी तो उधर लांस नायक पोलई ने, जिन्हें कि उस इलाके पर निगरानी रखने का काम दिया गया था, सशस्त्र विरोधियों के एक दल को नाले में भागते हुए देखा। इन्होंने अकेले ही उन पर धावा बोल दिया और नाले में उनका पीछा किया। जिस साहस और दृढ़ता से इन्होंने उनका पीछा किया उससे आशानुकूल परिणाम निकला। विरोधियों ने हथियार डाल दिए और आत्मसमर्पण कर दिया। गश्ती दल के वापस लौटने तक दल ये अकेले ही उन आत्मसर्मपित विरोधियों के ऊपर निगरानी रखते रहे।

इस कार्रवाई में लांस नायक विजय पोलई ने अदम्य साहस, उच्चकोटि की वीरता, दृढ़ता और पहलशक्ति का परिचय दिया।

6. 13604263 लांस नायक आनन्द राव चव्हाण,
पैरा।

लांस नायक आनन्द राव चव्हाण, भारत-तिब्बत सीमा पर स्थित चौकी में एक टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे थे। यह चौकी सतलुज नदी के समीप बिल्कुल ढलुवां चट्टानी क्षेत्र में स्थित है। इस सीमांत प्रदेश में 19 जनवरी, 1975 को एक भयंकर भूकम्प आया जहां पर यह चौकी स्थित थी उस ओर की ढलान पर ऊपर से एक भारी चट्टान आ गिरी, जिससे बड़े-बड़े शिलाखण्ड गिरने लगे और उस क्षेत्र में लोगों का जीवन खतरे में पड़ गया। इस मौके पर लांस नायक आनन्द राव चव्हाण ने बड़ी सूझबूझ से काम लिया और ऊपर से गिरते हुए मलबे और पत्थरों की चिंता न करते हुए अपनी चौकी के जवानों को इकट्ठा किया और उन्हें चट्टान के एक सुरक्षित छोर पर ले गए। इन्होंने जब कुछ स्थानीय ग्रामीणों को उस क्षेत्र में काम करते हुए देखा और उनके जीवन को खतरे में देखकर उन्हें तुरन्त अपने पास सुरक्षित स्थान पर बुला लिया। ठीक समय पर इन्होंने यह सब किया क्योंकि इसके तुरन्त बाद ही उस चौकी और पगडंडी पर बड़े-बड़े शिलाखण्ड आ गिरे और वह चौकी लगभग पूर्ण रूप से ध्वस्त हो गई। उनकी सूझबूझ ने अमूल्य जीवनों की रक्षा की।

उस दिन अपराह्न, रात और दूसरे दिन सुबह तक भूकम्प के बार-बार आए झटकों के बावजूद इन्होंने अपने साथियों का हौसला बुलन्द रखा और तब तक चौकी पर बने रहे जब तक इनके कम्पनी कमांडर ने इन्हें कार्यमुक्त न किया।

लांस नायक आनन्द राव चव्हाण ने आद्योपान्त असाधारण साहस, दृढ़ता और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

7. 4148073 सिपाही कुंवर सिंह,
कुमाऊं रैजिमेंट।

16 जनवरी, 1975 को कुमाऊं रैजिमेंट की एक कम्पनी ने विरोधियों के एक गिरोह को रोकने के लिए जगह-जगह प्रतिरोध खड़े किए। सिपाही कुंवर सिंह उस टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे थे जिसे दूसरे दिन सिमुक नाले में विरोधियों को छान मारने का आदेश दिया गया था। उन्होंने गिरोह को ढूंढ लिया और समय गवाएं बिना तुरन्त उस पर गोलियां चला दीं। गिरोह ने भी जवाब में गोलियां चलाईं। एक गोली सिपाही कुंवर सिंह के सीने पर लगी, लेकिन फिर भी इन्होंने, दुश्मन की भारी गोलाबारी के बावजूद उस समय तक गोली चलाना जारी रखा जब तक कि बाकी प्लाटून भी विरोधियों पर न टूट पड़ी। यद्यपि इनके सीने से काफी खून बह रहा था, इन्होंने एक विरोधी को घायल कर डाला और एक अन्य को पकड़ लिया।

इस कार्रवाई में सिपाही कुंवर सिंह ने अदम्य साहस, दृढ़ता और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

सं० 36-प्रेस/76—राष्ट्रपति निम्नांकित कार्मिकों को असाधारण कर्त्तव्यनिष्ठा तथा साहस के कार्यों के लिए "वायु सेना मैडल"/"एयर फोर्स मैडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. स्क्वाड्रन लीडर भारत भूषण कौशल (7023),
उड़ान (पायलट)।

स्क्वाड्रन लीडर भारत भूषण कौशल को जनवरी, 1963 में, भारतीय वायुसेना की उड़ान (पायलट) शाखा

में कमीशन प्रदान किया गया। फरवरी, 1974 से ये एक हैलीकोप्टर यूनिट की कमान कर रहे हैं।

20 जनवरी, 1975 को जब हिमाचल प्रदेश में भूचाल से भारी नुक्सान हुआ तो स्क्वाड्रन लीडर कौशल को बचाव और राहत कार्य के लिए वहां जाने को कहा गया। इन्होंने अपने हैलीकोप्टरों की एक टुकड़ी फौरन पूह में तैनात कर दी। वहां से वे लिओ गए, जहां भूचाल से सबसे ज्यादा क्षति हुई थी और जहां फौरन सहायता की जरूरत थी। हालांकि वहां हैलीकोप्टर उतारने की कोई जगह नहीं थी, फिर भी इन्होंने बड़ी दक्षता से अपने हैलीकोप्टर का चालन किया और उसे सुरक्षित उतार लिया। शीघ्र ही, इन्होंने दूसरे हैलीकोप्टरों के उतरने के लिए भी वहां जगह तैयार कर ली। बेहद खराब मौसम के बावजूद, इनकी टुकड़ी ने डाक्टरों और भारी मात्रा में दवाइयां और राहत का दूसरा सामान वहां पहुंचाया, तथा हताहतों को वहां से निकाला। इसमें, इन्होंने स्वयं भी 52 उड़ानें कीं। इनके प्रयासों से ही, संकट-ग्रस्त लोगों को समय पर सहायता और राहत पहुंचाई जा सकी।

इस प्रकार, स्क्वाड्रन लीडर भारत भूशण कौशल ने उच्चकोटि के साहस, नेतृत्व और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

2. फ्लाइट लैफ्टिनेन्ट अनिल गोविन्दराव बेन्द्रे (10570), उड़ान (पायलट)।

फ्लाइट लैफ्टिनेन्ट अनिल गोविन्दराव बेन्द्रे को अक्तूबर, 1966 में, भारतीय वायुसेना की उड़ान (पायलट) शाखा में कमीशन प्रदान किया गया। इन्होंने हैलीकोप्टरों में 2620 घंटे की उड़ानें की हैं, जिनमें 1950 घंटों की उड़ानें संक्रियात्मक क्षेत्र की हैं। इनका उड़ान-रिकार्ड हर प्रकार से दुर्घटना-रहित रहा है।

12 जुलाई, 1974 को जांच-पायलट की हैसियत से, पूर्वी क्षेत्र में एक संक्रियात्मक उड़ान के लिए ये एक यूनिट पायलट की स्क्रीनिंग कर रहे थे। इन्होंने एक अग्रिम हैली-पैड से 0910 बजे उड़ान भरी। सुरक्षा सेनाओं के कमाण्डर और तीन अन्य व्यक्ति भी इनके साथ थे। कुछ मिनट उड़ान करने के बाद, उन्हें खराब मौसम के कारण रास्ता बदलना पड़ा। नए मार्ग पर उड़ते हुए अभी कुछ ही मिनट हुए थे कि इनके हैलीकोप्टर को जोर का धक्का लगा, चटखने की आवाज़ आई और इनके सिर के कुल आठ इंच पीछे से एक गोली गुजर गई। यह एहसास होते ही कि हैलीकोप्टर पर मशीनगन से गोलियां चलाई जा रही हैं, वहां से बच निकलने के लिए इन्होंने एक तेज मोड़ काटा। तभी सह-पायलट ने इन्हें बताया कि सुरक्षा सेना के कमाण्डर को किसी छिपकर गोली चलाने वाले की गोली लगी है और जोर से खून बह रहा है। इन एकाएक हुई घटनाओं से फ्लाइट लैफ्टिनेन्ट बेन्द्रे बिल्कुल नहीं घबराए, अपने आप को शान्त रखा तथा यह मालूम करके कि हैलीकोप्टर अभी उड़ान के काबिल है, उस एकमात्र जगह की ओर उड़ चले जहां हस्पताल की सुविधा उपलब्ध थी। इन्होंने सुरक्षा पूर्वक अपना हैलीकोप्टर जमीन पर उतार लिया, जिससे जख्मी कमाण्डर की तुरन्त ही देखभाल की जा सके।

इस कार्यवाई में, फ्लाइट लैफ्टिनेन्ट अनिल गोविन्दराव बेन्द्रे ने उच्चकोटि के साहस, व्यावसायिक दक्षता और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

3. फ्लाइट लैफ्टिनेंट हरपाल सिंह अहलुवालिया (9821), उड़ान (पायलट)।

फ्लाइट लैफ्टिनेंट हरपाल सिंह अहलुवालिया को अक्तूबर, 1965, में भारतीय वायुसेना की उड़ान (पायलट) शाखा में कमीशन दिया गया। ये 2250 घंटे की उड़ान भर चुके हैं और इनके उड़ान-रिकार्ड पर कोई धब्बा नहीं है।

22 अक्तूबर, 1974 को इन्हें पूर्वी क्षेत्र में विशेष हैली-कोप्टर-वाहित संक्रिया पर तैनात किया गया था। मौसम बेहद खराब होने के बावजूद, ये बराबर दो दिन तक एक के बाद एक, लगातार, दूर-दराज के हैलीपैडों के लिए उड़ानें भरते रहे। एक बार फिर, जब इनकी यूनिट को दिसम्बर, 1974 और जनवरी, 1975 में हैलीवाहित-संक्रियाओं के लिए बुलाया गया तब भी इन्होंने 260 उड़ानें भरीं, जिसके परिणामस्वरूप यह संक्रिया भी पूरी सफल रही।

इन संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लैफ्टिनेंट हरपाल सिंह अहलुवालिया ने उच्चकोटि के साहस, व्यावसायिक कुशलता और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

4. फ्लाइट लैफ्टिनेन्ट बागिया लक्ष्मी कांत रेड्डी (11305), उड़ान (पायलट)।

फ्लाइट लैफ्टिनेंट बागिया लक्ष्मी कांत रेड्डी को दिसम्बर, 1967 में भारतीय वायुसेना की उड़ान (पायलट) शाखा में कमीशन दिया। इन्होंने, भिन्न-भिन्न प्रकार के क्षेत्रों में हैलीकोप्टरों की 2251 उड़ान-घंटों की दुर्घटना-रहित उड़ानें भरी हैं।

22 अक्तूबर, 1974 को इन्हें पूर्वी-क्षेत्र में एक विशेष हैलीवाहित संक्रिया पर तैनात किया गया। इन्होंने इस चुनौती भरे काम को स्वीकार किया और दूर-दराज के हैलीपैडों के लिए उड़ानें भरके, कुल सात दिन की अवधि में उस कार्य को पूरा कर दिखाया। अपने प्राण हथेली पर रखकर, इन्होंने अडिग उत्साह से 122 खतरनाक उड़ानें भरीं।

फ्लाइट लैफ्टिनेंट बागिया लक्ष्मी कांत रेड्डी ने आद्योपांत उच्चकोटि के साहस, व्यावसायिक कुशलता और कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

5. फ्लाइट लैफ्टिनेंट सुभाष चन्द्र खरबंदा (10113), उड़ान (पायलट)।

फ्लाइट लैफ्टिनेंट सुभाष चन्द्र खरबंदा को मार्च, 1966 में, भारतीय वायुसेना की उड़ान (पायलट) शाखा में कमीशन दिया गया। ये अप्रैल, 1972 से एक हैलीकोप्टर यूनिट में कार्य कर रहे हैं।

अक्तूबर और दिसम्बर, 1974 में, जब इनकी यूनिट को पूर्वी-क्षेत्र में विशेष हैलीवाहित संक्रिया के लिए बुलाया गया तो इन्हें अग्रिम हैलीपैडों तक बहुत-सी उड़ानों के लिए चुना गया। इन्होंने इस क्षेत्र में 28 सफल उड़ानें भरीं। इन्हें अक्सर अपने प्राण संकट में डालकर भी सुबह से शाम तक उड़ानें भरनी पड़ती थीं। इनकी अनगिनत उड़ानों के फलस्वरूप ये संक्रियाएं पूरी सफलता से संपन्न हुई।

इस प्रकार, फ्लाइट लैफ्टिनेन्ट सुभाष चन्द्र खरबंदा ने उच्चकोटि के साहस, व्यावसायिक कुशलता और कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

6. फ्लाइट लैफ्टिनेंट भरत राज लोहटिया (11419), उड़ान (पायलट)।

फ्लाइट लैफ्टिनेंट भरत राज लोहटिया को दिसम्बर, 1967 में, भारतीय वायुसेना की उड़ान (पायलट) शाखा में कमीशन प्रदान किया गया। सितम्बर, 1972 से, ये एक हैलीकोप्टर यूनिट में काम कर रहे हैं।

अक्तूबर-दिसम्बर, 1974 में, जब इनकी यूनिट को पूर्वी क्षेत्र में हैलीकोप्टर-वाहित विशेष संक्रियाओं के लिए बुलाया गया तो ये इन संक्रियाओं में लगे एक हैलीकोप्टर के कैप्टन थे। स्थिति की गंभीरता और समय की कमी के कारण, हैलीकोप्टरों में सामान्य क्षमता से ज्यादा सामान भरकर ले जाना आवश्यक हो गया था। इसके लिए भारी साहस और उच्चकोटि की उड़ान कुशलता की जरूरत थी, क्योंकि एक तो मौसम बेहद खराब था, दूसरे इलाका खतरनाक था। इन्होंने अपनी जान को खतरे में डालते हुए सुबह से शाम तक 22 सफल उड़ानें भरीं।

फ्लाइट लैफ्टिनेंट भरत राज लोहटिया ने आद्योपान्त उच्चकोटि के साहस, व्यावसायिक दक्षता और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

कु० बालचन्द्रन, राष्ट्रपति के सचिव

उद्योग और नागरिक पूर्ति मंत्रालय
(औद्योगिक विकास विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 31 मार्च 1976

संकल्प

सं० 11/24/72-इले० इण्ड०—भारत सरकार ने ग्रेफाइट और कार्बन उद्योग की प्रगति और विकास की जांच करने तथा परामर्श देने और इस क्षेत्र के उत्पादकों की विभिन्न प्रकार की समस्याओं पर विचार करने के लिए ग्रेफाइट और कार्बन उद्योग के लिए एक नामिका गठित करने का निश्चय किया है।

नामिका का गठन निम्न प्रकार होगा :—

अध्यक्ष

1. श्री बी० हिम्मत सिंहका
प्रबन्ध निदेशक,
इण्डिया कार्बन लि०,
6, ओल्ड पोस्ट आफिस, स्ट्रीट,
कलकत्ता।

सदस्य

2. श्री डी० श्रीनिवासन,
प्रबन्ध सचिव,
स्टील फरनेस एसोसिएशन, आफ इण्डिया,
5/डी०, बन्दना, 11, टाल्सटाय मार्ग,
नई दिल्ली।

3. श्री ए० एस० नागिया,
मुख्य विपणन प्रबन्धक,
दी प्रोजेक्ट एण्ड इक्विपमेंट,
कारपोरेशन आफ इंडिया लि०,
चन्द्रलोक, 36 जनपथ,
नई दिल्ली-110001।

4. श्री सी० वेंकटरामन,
सहायक अधीक्षक,
भारत एल्यूमीनियम कम्पनी लि०,
एफ-41, नई दिल्ली साउथ एक्सटेंशन,
भाग-1, रिंग रोड,
पो० बा० सं० 3902,
नई दिल्ली-110049।

5. श्री जी० लोबो,
सचिव,
दी इण्डिया फेरो एलाय प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन,
18, श्री निकेतन, 14-एम० कार्वे रोड,
बम्बई-400020।

6. श्री बी० के० एम० मैनन,
सचिव,
अल्कली मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन आफ इण्डिया,
बंशीलाल मैन्शन,
11, ब्रूसे स्ट्रीट, फोर्ट,
बम्बई।

7. श्री डी० एन० आजाद,
पेट्रो कार्बन्स एण्ड केमिकल्स कम्पनी,
पांचवां तला,
हिन्दू फैमिली बिल्डिंग,
27, आर० एन० मुखर्जी रोड,
कलकत्ता।

8. डा० ए० आर० वर्मा, एफ० एन० ए०,
निदेशक,
राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला,
नई दिल्ली।

9. श्री आर० त्यागराजन,
उत्पादन विभाग,
इण्डियन एल्यूमीनियम कम्पनी लि०,
1, मिडिल टोन स्ट्रीट,
कलकत्ता-700016।

10. डा० एस० के० भट्टाचारजी,
(मेटल एण्ड कार्बन लि०),
यूनियन कार्बाइड इण्डिया लि०,
पो० बा० संख्या 2170,
कलकत्ता-700001 ।

11. श्री एस० कुमारस्वामी,
यूनियन कार्बाइड इण्डिया लि०,
यूनाइटेड कामर्शियल बिल्डिंग,
पार्लियामेंट स्ट्रीट,
नई दिल्ली ।

12. डा० के० वी० स्वामीनाथन,
निदेशक (टी० यू०),
विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग,
टैक्नोलोजी भवन, न्यू मेहरोली रोड़,
नई दिल्ली-110029 ।

13. श्री सी० एल० आनन्द,
प्रबन्ध निदेशक,
तोशिबा आनन्द बेटरीज लि०,
महात्मा गांधी रोड़,
पो० बा० नम्बर, 1077 एरणाकुलम,
कोचीन-11 (केरल) ।

14. श्री के० वीराजू,
सचिव,
दी आल इण्डिया ग्रेफाइट क्रूसिबल मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन,
राजामुंदरी-533103,
पूर्वी गोदावरी, जिला आ० प्र० ।

15. औद्योगिक विकास विभाग का एक प्रतिनिधि,
नई दिल्ली ।

16. श्री एच० एन० दोषी,
मुख्य सलाहकार,
एस्ट्रेला बैटरीज लि०,
यूसफ बिल्डिंग, वीर नरीमन रोड,
फोर्ट, बम्बई-400001 ।

17. श्री जी० ए० मैनियर,
मुख्य प्रशासक,
ग्रेफाइट इण्डियन लि०,
31, चौरंगी रोड,
कलकत्ता-700016 ।

18. मै० नेशनल मेटलर्जिकल लेबोरेटरी,
जमशेदपुर का प्रतिनिधि ।

19. मै० भारतीय मानक संस्थान,
मानक भवन, 9 बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-110002 ।

20. पेट्रोलियम एवं रसायन
मंत्रालय (पेट्रोलियम विभाग),
शास्त्री भवन,
नई दिल्ली का प्रतिनिधि ।

21. श्री पी० गोपीनाथन,
उप-निदेशक,
(सी० एण्ड जी०),
विकास आयुक्त,
लघु उद्योग,
निर्माण भवन,
नई दिल्ली ।

सदस्य-सचिव

22. श्री जे० एस० मथारु,
विकास अधिकारी,
तकनीकी विकास का महानिदेशालय,
नई दिल्ली ।

2. सामिका का कार्यकाल दो वर्षों का होगा ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक प्रति सभी सम्बन्धित लोगों को भेजी जाये तथा आम सूचना के लिए इसे भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाये ।

ऐ० महादेवन, संयुक्त सचिव

विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग

नई दिल्ली-110029, दिनांक 5 अप्रैल 1976

सं० एफ० 1(2)/74-एस० आर०-1—राष्ट्रीय अनुसंधान विकास निगम (कम्पनी अधिनियम 1956 के अधीन पंजीकृत कम्पनी) के अन्तर्नियमों के अनुच्छेद 89 के अनुसरण में, राष्ट्रपति, नीचे दर्शाई गई अवधि में, तत्काल ही, निगम के निदेशक मंडल में निम्नलिखित निदेशक नियुक्त करते हैं :—

नाम	जिस तिथि तक नियुक्ति दी गई
श्री एम० सत्यापाल, सलाहकार (उद्योग तथा खनिज), योजना आयोग, योजना भवन, नई दिल्ली-110001	14-9-1976

एन० पी० सिंह, उप-सचिव

कृषि और सिंचाई मंत्रालय

(कृषि विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 7 अप्रैल 1976

संकल्प

विषय :—वन अनुसंधान संस्थान तथा महाविद्यालय, देहरादून के कोर्ट का गठन ।

सं० 12-6/76-एफ० आर० वाई०-1—खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास और सहकारिता मंत्रालय के नाम में परिवर्तन और इस मंत्रालय के वानकी प्रभाग में संयुक्त सचिव की नियुक्ति हो जाने के फलस्वरूप कृषि और सिंचाई मंत्रालय (कृषि विभाग) के 4 नवम्बर, 1961 के संकल्प संख्या एफ० 12-4/59-एफ०, जिसका समय-समय पर संशोधन हुआ है, द्वारा गठित वन अनुसंधान संस्थान तथा महाविद्यालय, देहरादून के कोर्ट और इसकी कार्यकारी परिषद के गठन में नीचे लिखे परिवर्तन करना आवश्यक हो गया है ।

(1) संकल्प के पैरा 1 की 15–16वीं पंक्तियों में लिखे "खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास और सहकारिता मंत्री" **शब्दों के स्थान पर** "कृषि तथा सिंचाई मंत्री" **शब्द प्रतिस्थापित किए जाएं ।**

(2) संकल्प के पैरा 2 में "वन अनुसंधान संस्थान तथा महाविद्यालय के कोर्ट का गठन" शीर्षक के अन्तर्गत :—

(i) "खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास और सहकारिता" **शब्दों के स्थान पर** "कृषि तथा सिंचाई मंत्री" **शब्द प्रतिस्थापित किए जाएं ।**

(ii) "सचिव, खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास और सहकारिता (कृषि विभाग)" **शब्दों के स्थान पर** "सचिव, कृषि और सिंचाई मंत्रालय (कृषि विभाग) " **शब्द प्रतिस्थापित किए जाएं ।**

(ii) "कृषि विभाग में वानिकी के इंचार्ज उप सचिव कोर्ट के सचिव होंगे" **शब्दों के स्थान पर** "कृषि विभाग में वानिकी के इंचार्ज संयुक्त सचिव कोर्ट के सचिव होंगे" **शब्द प्रतिस्थापित किए जाएं ।**

(3) संकल्प के पैरा 2 में "कार्यकारी परिषद का गठन" के अन्तर्गत "कोर्ट का सचिव कार्यकारी परिषद का सचिव होगा" **शब्दों के स्थान पर** "कोर्ट का सचिव कार्यकारी परिषद का सदस्य सचिव होगा" **शब्द प्रतिस्थापित किए जाएं ।**

(4) संकल्प के पैरा 4 के दूसरे वाक्य में लिखे "खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास और सहकारिता (कृषि विभाग)" **शब्दों के स्थान पर** "कृषि तथा सिंचाई मंत्रालय (कृषि विभाग)" **शब्द प्रतिस्थापित किए जाएं ।**

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक-एक प्रति भारत सरकार के सभी मंत्रालयों और विभागों तथा सभी राज्य सरकारों एवं संघ राज्य क्षेत्रों, योजना आयोग, मंत्रिमण्डल सचिवालय, लोक सभा सचिवालय, राज्य सभा सचिवालय, राष्ट्रपति सचिवालय, प्रधान मंत्री सचिवालय, भारत के नियंत्रक तथा महालेखा परीक्षक और वन अनुसंधान संस्थान तथा महाविद्यालय के कोर्ट और इसकी कार्यकारी परिषद के सभी सदस्यों, संयुक्त सचिव (एफ० तथा डब्ल्यू० दल), अवर सचिव (एफ०) को भेज दी जाएं ।

यह भी आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प सामान्य सूचना के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित कर दिया जाए ।

एन० डी० जयाल, संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 1st July 1975

No. 34-Pres./76.—The President is pleased to approve the award of "Shaurya Chakra" for acts of gallantry to :—

1. 2861347 *Rifleman PIRTHI SINGH RAJ RIF*

(*Effective date of the award*: 17*th January*, 1975)

On the 17th January, 1975, Rifleman Pirthi Singh of 2 Raj Rifles was the leading scout of a party deputed to deliver a tracker dog to a rifle company which was pursuing a gang of hostiles. The party had to pass through five miles of thick bamboo jungle where the hostiles hideouts were suspected to be located. When the party reached approximately halfway, they were fired at by a group of hostiles armed with automatic weapons. In the ensuing encounter Rifleman Pirthi Singh sustained a bullet injury in the face, but undaunted, he immediately charged on the hostile position. He was wounded a second time in the hand but without caring for the injury, he continued his single handed assault. He killed two hostile persons on the spot and made others to flee, thus saving his group which otherwise would have been trapped in hostile fire. Rifleman Pirthi Singh, giving preference to duty, refused to be evacuated and went with the party to deliver the dog.

In this action, Rifleman Pirthi Singh, displayed exemplary courage, determination and devotion to duty of a high order.

2. *SQUADRON LEADER RAJINDER PAL SINGH DHILLON* (7741) *FLYING* (*PILOT*)

(*Effective date of the award* : 24*th January*, 1975)

Squadron Leader Rajinder Pal Singh Dhillon was commissioned in the Flying (Pilot) Branch of the Indian Air Force in November, 1962. He has been serving as the Flight Commander of a Helicopter Unit since March, 1974.

On the 24th January, 1975, he was detailed to carry out the earthquake relief operations in Himachal Pradesh. The weather was extremely inclement and the hostile terrain made the flying effort extremely hazardous. With a deep sense of devotion, relentless zeal and determination, he executed his task with true professionalism. Throughout that day, he braved and battled against the weather and the terrain and delivered his vital supplies of relief material and evacuated those in need of urgent medical attention. During subsequent missions, he executed daring landings at untried helipads and precision drops at miniature Dropping Zones. During these operations he flew a total of 32 sorties and airlifted air-dropped large quantities of material which resulted in timely relief to the affected people.

Throughout, Squadron Leader Rajinder Pal Singh Dhillon displayed courage, professional skill and devotion to duty of a high order.

No. 35-Pres./76.—The President is pleased to approve the award of the "SENA MEDAL"/"ARMY MEDAL" to the

undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty and courage :—

1. *Captain HARVINDER SINGH HANSPAL* (SS-24393) *KUMAON REGIMENT.*

On 8th October, 1974, Captain Harvinder Singh Hanspal, Officer Commanding of a Company, was ordered to lead a platoon patrol to Mogtikan. He was assigned the task of dominating the eastern bank of the Dikhu river and to intercept a hostile gang, which was to cross the river on its route through Phom.

On 12th October, 1974, when Captain Hanspal with his patrol, was returning to Longieng after completing his task, he heard some firing. Without wasting any time, he ordered his men to leave their packs and heavy equipment on the spot to the care of a few men and rushed his platoon to the scene of firing. On the way, he met a Village Guard Commander who informed him that his patrol had encountered a gang of about 80 hostiles. (Captain Hanspal promptly assessed the situation, deployed his men and started searching the area. He discovered valuable documents and some items of equipment, clothing and ration. On the basis of some blood marks, he picked up the trial and, for the next three days, relentlessly pursued the fleeing hostiles with his men through extremely difficult terrain.

Again on 21st October, 1974, Captain Hanspal, while patrolling another area with 15 men, picked up the trail of a hostile gang. He and Naik Keshav Datt after successfully negotiated a steep slope of a cliff detected the hostile gang resting in the thick jungle. As the gang had also spotted him, Captain Hanspal had no time to wait for his patrol. Unmindful of his personal safety, he charged at them, with Naik Keshav Datt giving him admirable support. The members of the gang were taken completely offguard and ran helter-shelter leaving behind an automatic rifle, ammunition, a large number of personal packs and equipment, besides valuable documents.

In these encounters, Captain Harvinder Singh Hanspal displayed great courage, leadership, determination and devotion to duty.

2. JC 67655 Naib Subedar FAQIR CHAND KATOCH CORPS OF SIGNALS

On 19th January, 1975, an earthquake of severe magnitude rocked Sumdo and the adjoining areas. The side-walls of Nissan huts started collapsing. Other buildings developed cracks and big boulders from all directions started falling towards the valley where the camp was located. Minutes after the severe tremors, the Officer Commanding, Scouts Wing, tried to contact troops on picquets to enquire about their condition, but all the telephone lines had gone dead and the contact over the lines was not possible.

Naib Subedar Faqir Chand Katoch, realizing the importance of line communication, voluntarily organised a patrol to establish contact with the troops on picquets. The tremors were still very frequent, and heavy boulders were rolling down but unmindful of his personal safety, he proceeded with his work and succeeded in establishing communications throughout the Sub Sector by the evening of 20th January, 1975.

In this action, Naib Subedar Faqir Chand Katoch displayed great courage, professional skill and devotion to duty of a high order.

3. 3961012 Naik RAM SINGH DOGRA REGIMENT

On 19th January, 1975 a violent earthquake took place in Himachal Pradesh, and village Kaurik, which had a population of about 50, was completely destroyed. Realising the severity of the situation the Company Commander decided to send a patrol to render medical aid to the civilian population; Naik Ram Singh volunteered to lead the patrol. With tremendous courage and confident he led the patrol over the hazardous route that had been completely damaged at many places. The patrol reached the village where due to continuing tremors, boulders were still rolling down.

He immediately set down to organise relief work; erected shelters for the survivors of the village and arranged evacuation of the injured. Next day, he succeeded in securing some food and tents for the local population.

In this mission, Naik Ram Singh displayed courage, determination and devotion to duty of a high order.

4. 2850771 Lance Naik PABUDAN SINGH 2 RAJ RIF

On the 17th January, 1975, Lance Naik Pabudan Singh was leading a section which was deployed to surround a hostile gang. His section was given the task of covering a track which passed through thick jungle and had a steep fall of about thirty feet on its left. Visibility in the area was limited to only five yards. In the afternoon a sentry of his section informed him about some suspected movement. He went to the sentry's position and, cautioning the sentry to remain on the alert, he himself went forward alone to search the area ahead. He had hardly gone about fifty yards when he suddenly encountered three hostiles, two of whom were armed with automatic weapons. The distance between him and the hostiles was so close that neither of them could open fire. The hostiles, in order to escape, immediately jumped down about 30 feet into a Khud to their right. Due to thick Jungle, effective fire could not be brought down on the escaping hostiles. Lance Naik Pabudan Singh, in an effort to catch the hostiles, also jumped after them. To distract his attention, the hostiles threw away their weapons. Lance Naik Pabudan Singh chased the hostiles and ultimately apprehended them. He brought all three of them to his section post and subsequently recovered one 7.62 mm IA SLR Rifle and one .303 Rifle which were abandoned by the fleeing hostiles. Out of the captured hostiles, one turned out to be a self-styled officer who, on interrogation, gave valuable information about the remainder of the gang which enabled their successful apprehension.

In this action, Lance Naik Pabudan Singh displayed exemplary courage, presence of mind and devotion to duty of a high order.

5. 9211936 Lance Naik VIJOYO POLAI MAHAR REGIMENT

On the 17th January, 1975, a gang of hostiles was sighted near Longchang village. During the violent encounter that ensued, it was noticed that some of the hostiles were trying to slip away through a small nullah covered with thick undergrowth. Immediately a patrol led by a JCO, was rushed from a flank to block the movement of the hostiles. Lance Naik Vijoyo Polai was the leading scout of this patrol. After a hot chase, the patrol managed to capture the hostiles. While the patrol was busy rounding up the hostiles, Lance Naik Polai, who was detailed to keep watch over the area, noticed another armed group of hostiles running away into the nullah. He charged at them and single-handed chased the hostiles through the nullah. His determined and daring act of keeping up the chase of the hostiles, had the desired effect. The hostiles dropped their weapons and surrendered. He kept guard over the surrended hostiles alone, till the rest of the patrol joined up.

In this action Lance Naik Vijoyo Polai displayed exemplary courage, gallantry, determination and initiative of a very high order.

6. 13604263 Lance Naik ANANDRAO CHAVAN PARA.

Lance Naik Anandrao Chavan was in command of a detached section post on the Indo-Tibet border. This post is located in the area of sheer rocky slopes along the Sutlej river. A violent earth quake occurred in this border region on 19th January, 1975. This caused a heavy rock fall along the slopes where the post was located. Big boulders were rolling down the slopes endangering the life of people in the area. Lance Naik Anandrao Chavan showed great presence of mind and, without caring for the flying debris and stones, mustered his men and led them to a safe ledge protected by a cutting on the spur. He noticed some local villagers working in that area and realising the danger to them, he called them over to the place of shelter. His action was just in time as immediately after, huge boulders fell on the post and the track. The post was almost completely demolished. The presence of mind exhibited by him was instrumental in saving precious lives.

Inspite of recurrent tremors all through the remaining afternoon, subsequent night and next morning, he encouraged his men and continued at the post till his Company Commander relieved him of his duty.

Throughout this period, Lance Naik Anandrao Chavan displayed courage, determination and exceptional devotion to duty.

7. 4148073 Sepoy KUNWAR SINGH KUMAON REGIMENT

On the 16th January, 1975, a company of the Kumaon Regiment established stop to prevent the escape of a hostile gang. Sepoy Kunwar Singh was the leading scout of a Section which on the following day was ordered to carry out a search of Tsimuk Nala. He located the gang and without losing any time, opened fire. The gang immediately fired back hitting Sepoy Kunwar Singh on the chest. He displayed exemplary courage and utter disregard to his personal safety by maintaining sustained fire till the remainder of the Platoon closed in on the gang. Though profusely bleeding, he wounded one of the hostiles and captured another.

In this action, Sepoy Kunwar Singh displayed exemplary courage, determination and devotion to duty of a high order.

No. 36-Pres./76.—The President is pleased to approve the award of the "Vayu Sena Medal"/"Air Force Medal" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty and courage :—

1. SQUADRON LEADER, BHARAT BHUSHAN KOSHAL (7023) FLYING (PILOT)

Squadron Leader Bharat Bhushan Koshal was commissioned in the Flying (Pilot) Branch of the Indian Air Force in January, 1963. He has been commanding a Helicopter Unit since February, 1974.

On the 20th January, 1975, when a earth-quake caused vast damage in Himachal Pradesh, Squadron Leader Koshal was called upon to undertake rescue and relief work. He immediately positioned a detachment of his Helicopters at Pooh. From there he flew to Leo which was one of the worst affected places and was in urgent need of help. Even though there was no place to land, he very skilfully manoeuvred his helicopter and landed safely. Very soon he got a place prepared for other helicopters to land. Despite extremely bad weather, his detachment airlifted doctors and large quantities of medicines and relief supplies, and evacuated casualties. He himself flew 52 sorties. His efforts resulted in the timely relief to the affected people.

Squadron Leader Bharat Bhushan Koshal thus displayed courage, leadership and devotion to duty of a high order.

2. FLIGHT LIEUTENANT ANIL GOVINDRAO BENDRE (10570) FLYING (PILOT)

Flight Lieutenant Anil Govindrao Bendre was commissioned in the Flying (Pilot) Branch of the Indian Air Force in October, 1966. He has flown 2620 hours on Helicopters of which 1950 hours have been flown by him in operational areas. His flying record has been an accident free one.

On the 12th July, 1974, in his capacity as a check pilot, he was screening a unit pilot, while undertaking an operational commitment in Eastern Sector. He took off from an advance helipad at 0910 hours, with the Commander Security Forces and three other passengers on board. After a few minutes' flight he had to change the route on account of bad weather. Within minutes of flying on the new course, the helicopter was rocked by a sharp, cracking sound just eight inches behind his head. Realising that they were under machine gun fire, he initiated a quick hard turn to get away and was then informed by the co-pilot that the Commander Security Forces was hit, apparently by the sniper's bullet, and was bleeding profusely. Undettered by the chain of sudden developments and keeping a cool decisive head, Flight Lieutenant Bendre, after ascertaining the serviceability of the helicopter, headed towards the only location where hospital facilities were available. He landed the helicopter safely, enabling the wounded Commander to be speedily attended to.

In this action, Flight Lieutenant Anil Govindrao Bendre displayed courage, professional skill and devotion to duty of a high order.

3. FLIGHT LIEUTENANT HARPAL SINGH AHLUWALIA (9821) FLYING (PILOT)

Flight Lieutenant Harpal Singh Ahluwalia was commissioned in the Flying (Pilot) Branch of the Indian Air Force in October, 1965. He has flown a total of 2250 hours and has an unblemished flying record.

On the 22nd October 1974, he was detailed to undertake special heliborne operations in the Eastern Sector. He carried out sorties to far-flung helipads in two days of intensive flying, despite adverse weather. Subsequently, when the unit was again called upon to carry out heliborne operations during December, 1974 and January, 1975 he flew a total of 260 sorties which resulted in successful completion of the operations.

During these operations, Flight Lieutenant Harpal Singh Ahluwalia displayed courage, professional skill and devotion to duty of a high order.

4. FLIGHT LIEUTENANT BAGIA LAXMI KANTH REDDY (11305) FLYING (PILOT)

Flight Lieutenant Bagia Laxmi Kanth Reddy was commissioned in the Flying (Pilot) Branch of the Indian Air Force in December, 1967. He has flown a total of 2251 accident free hours on helicopters over a myriad of terrain.

On 22nd October, 1974, he was detailed to undertake special heliborne operations, in the Eastern Sector. He under took this challenging task and within a period of seven days completed the same by flying to far-flung helipads. Regardless of his personal safety, he flew 122 hazardous sorties with undeterred zeal.

Throughout, Flight Lieutenant Bagia Laxmi Kanth Reddy displayed courage, professional skill and devotion to duty of a high order.

5. FLIGHT LIEUTENANT SUBHASH CHANDRA KHARBANDA (10113) FLYING (PILOT)

Flight Lieutenant Subhash Chander Kharbanda was commissioned in the Flying (Pilot) Branch of the Indian Air Force in March, 1966. He has been serving with a helicopter unit since April, 1972.

During October and December, 1974 when the Unit was called upon to mount special heliborne operations in the Eastern Sector, he was chosen to undertake numerous missions to forward helipads. He undertook 28 successful missions in the theatre. He often had to fly from dawn to dusk. He carried out numerous sorties which resulted in successful completion of the operations.

Flight Lieutenant Subhash Chander Kharbanda thus displayed courage, professional skill and devotion to duty of a high order.

6. FLIGHT LIEUTENANT BHARAT RAJ LOHTIA (11419) FLYING (PILOT)

Flight Lieutenant Bharat Raj Lohtia was commissioned in the Flying (Pilot) Branch of the Indian Air Force in December, 1967. He has been serving with a Helicopter Unit since September, 1972.

During October and December, 1974 when the unit was called upon to mount special heliborne operations in Eastern Sector, he was the Captain of one of the helicopters engaged in the operations. Due to urgency of the situation and limited time, the helicopter had to be flown in the over load variant. The task required courage and flying skill of a very high order due to turbulent weather conditions in the inhospitable terrain of Eastern Sector. Disregarding his personal safety, he carried out 22 successful missions often flying from dawn to dusk.

Throughout, Flight Lieutenant Bharat Raj Lohtia displayed courage, professional skill and devotion to duty of a high order.

K. BALACHANDRAN
Secretary to the President

MINISTRY OF INDUSTRY & CIVIL SUPPLIES
(DEPTT. OF IND. DEVELOPMENT)

New Delhi, the 31st March 1976

RESOLUTION

No. 11/24/72-E1.Ind.—The Government of India have decided to constitute a Panel for Graphite and Carbon Industry with the object of examining and advising the growth and development of this industry and also for considering the

various problems faced by the manufacturers in this field. The composition of the Panel will be as follows :

Chairman

1. Mr. B. Himmatsingka,
Managing Director
Indian Carbon Ltd.,
6, Old Post Office Street,
Calcutta.

Members

2. Mr. D. Srinivasan,
Executive Secretary,
Steel Furnace Association of India,
5/D, Vandhana, 11, Tolstoy Marg,
New Delhi.

3. Mr. A. S. Nangia,
Chief Marketing Manager,
The Project & Equipment Corpn. of India Ltd.,
Chandralok, 36, Janpath, *New Delhi*-110001.

4. Mr. C. Venkataraman,
Assistant Superintendent,
Bharat Aluminium Co. Ltd.,
F. 41, New Delhi South Extension Part-I
Ring Road, P.B. No. 3902, *New Delhi*-110049

5. Mr. G. Lobo,
Secretary,
The Indian Ferro Alloy Producers Association,
18, Sriniketan-14, M. Karve Road,
Bombay-400020.

6. Shri V. K. M. Menon,
Secretary,
Alkali Manufacturers Association of India,
Bansilal Mansion,
11, Bruce Street, Fort, *Bombay.*

7. Shri D. N. Azad,
Petrocarbons & Chemicals Co.,
5th Floor, Hindu Family Building,
27, R. N. Mukherjee Road,
Calcutta.

8. Dr. A. R. Verma, FNA,
Director,
National Physical Laboratory,
New Delhi.

9. Mr. R. Thyagarajan,
Production Deptt.
Indian Aluminium Co. Ltd.
1, Middleton Street,
Calcutta-700016.

10. Dr. S. K. Bhattacharjee,
(Metal & Carbon Ltd.)
Union Carbide India Ltd.,
Calcutta-700001.

11. Mr. S. Kumaraswami,
Union Carbide India Ltd.
United Commercial Bank Ltd.,
Parliament Street.
New Delhi.

12. Dr. K. V. Swaminathan,
Director (T.U.),
Deptt. of Science & Technology,
Technology Bhavan, New Mehrauli Road,
New Delhi-110029.

13. Mr. C. L. Anand,
Managing Director,
Toshiba Anand Batteries Ltd.,
Mahatma Gandhi Road
P.B. No. 1077, Ernakulam,
Cochin-11 (Kerala).

14. Shri K. Veeraju,
Secretary,
The All India Graphite Crucible Manufacturers Assn.,
Rajamundary-533103,
East Godavari Distt. (A.P.).

15. Representative of Deptt. of Ind. Development,
New Delhi.

16. Mr. H. N. Doshi,
Chief Adviser,
Estrela Batteries Ltd.,
Yusuf Building, Veer Nariman Road,
Fort, *Bombay*-400001.

17. Mr. G. A. Manier,
Chief Executive,
Graphite India Ltd.,
31, Chowringhee Road, *Calcutta*-700016.

18. Representative of
M/s. National Metallurgical Laboratory,
Jamshedpur.

19. Representative of
M/s. Indian Standards Institution,
Manak Bhavan, 9, Bahadur Shah Zafar Marg,
New Delhi-110002.

20. Representative of
Ministry of Petroleum & Chemical,
(Deptt. of Petroleum) Shastri Bhavan,
New Delhi.

21. Shri P. Gopinathan,
Deputy Director (C&G),
Development Commissioner,
Small Scale Industries,
Nirman Bhavan, ***New Delhi.***

Member-Secretary

22. Shri J. S. Matharu,
Development Officer,
Directorate General of Technical Development,
New Delhi.

2. The term of the Panel will be for a period of two years.

ORDER

ORDERED that copy of the Resolution be communicated to all concerned and that it be published in the Gazette of India, for general information.

I. MAHADEVAN, Jt. Secy.

DEPARTMENT OF SCIENCE AND TECHNOLOGY

New Delhi, the 5th April 1976

No. F.1(2)/74-SRI.—In pursuance of Article 89 of the Articles of Association of the National Research Development Corporation (A company registered under the Companies Act of 1956), the President is pleased to appoint the following Director on the Board of Directors of the Corporation with immediate effect against the period shown as below :—

Name	*Date upto which appointed*
Shri M. Satyapal, Adviser (Industries & Minerals), Planning Commission, Yojana Bhavan, New Delhi-110001.	14-9-1976

N. P. SINGH, Dy. Secy.

MINISTRY OF IRRIGATION AND AGRICULTURE
(DEPARTMENT OF AGRICULTURE)

New Delhi, the 7th April 1976

RESOLUTION

SUB : *Forest Research Institute and Colleges, Dehra Dun —Constitution of a Court for the—*

No. 12-6/76/FRY-I.—Consequent upon the change in nomenclature of the Ministry of Food, Agriculture Community Development and Cooperation and the appointment of Joint Secretary in the Forestry Division of the Ministry, it has been found necessary to carry out the following changes in the Constitution of the Court of the Forest Research Institute & Colleges, Dehra Dun and its Executive Council

constituted *vide* Ministry of Agriculture & Irrigation (Department of Agriculture) Resolution No. F.12-4/59-F, dated the 4th November, 1961, as amended from time to time :—

(1) In paragraph 1 of the Resolution *for the words* "Minister for Food, Agriculture, Community Development and Cooperation" appearing in lines 15-16 *the words* "Minister for Agriculture & Irrigation" may be *substituted.*

(2) In paragraph 2 of the Resolution under the heading 'Composition of the Court of the Forest Research Institute & Colleges, Dehra Dun—

(i) *For* the words "The Minister for Food, Agriculture, Community Development and Cooperation", the words "The Minister for Agriculture and Irrigation" may be *substituted.*

(ii) *For* the words "The Secretary, Ministry of Food, Agriculture, Community Development and Cooperation (Department of Agriculture), the words "The Secretary, Ministry of Agriculture and Irrigation (Department of Agriculture)" may be *substituted.*

(iii) *For* the words "The Deputy Secretary in-charge of Forestry in the Department of Agriculture will be the Secretary of the Court", *the words* "The Joint Secretary in-charge of Forestry in the Department of Agriculture will be the Secretary of the Court" may be *substituted.*

(3) In paragraph 2 of the Resolution under the heading 'Composition of the Executive Council' *for the words* "The Secretary of the Court shall be the Secretary of the Executive Council", *substitute the words* "The Secretary of the Court shall be the Member-Secretary of the Executive Council".

(4) In paragraph 4 of the Resolution, *for the words* "Ministry of Food, Agriculture, Community Development and Cooperation (Department of Agriculture)" appearing in the second sentence, *the words* "Ministry of Agriculture and Irrigation (Department of Agriculture)" may be *substituted.*

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all Ministries and Departments of the Govt. of India and all the State Governments and Union Territories, Planning Commission, Cabinet Secretariat, Lok Sabha Secretariat and Rajya Sabha Secretariat, President's Secretariat, Prime Minister's Secretariat, CAG1 and all members of the Court of the Forest Research Institute & Colleges, Dehra Dun and its Executive Council, Joint Secretary (F & WL), Under Secretary (F).

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

N. D. JAYAL, Jt. Secy.

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD,
AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1976